IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

मधुकांत जी की व्यंग्य प्रधान कहानियों में जीवन का कटु सत्य।

नवल पाल (शोधार्थी)
गुरू काशी विश्वविद्यालय
पंजाब।

अनुक्रमांक A206841003

शोध निर्देशक
डॉ. ज्ञानी देवी गुप्ता
सहायक आचार्य हिन्दी
विभागाध्यक्ष हिन्दी विभाग
गुरू काशी विश्वविद्यालय
पंजाब।

साहित्य समाज का दर्पण है। यह जब तक समाज के लिए उपादेय है, तभी तक ग्राह्य है। उपादेयता में ही इसकी प्रासंगिकता निहित है। जो साहित्य जितने लम्बे समय तक अपनी प्रासंगिकता रखता है, वह उतना ही समादृत होता है। समसामयिक परिस्थितियां लेखक को प्रभावित करती हैं। लेखक के मन पर उन परिस्थितियों के प्रति विशिष्ट प्रतिक्रिया होती है, यह प्रतिक्रिया साहित्यसृजन का हेतू है। उस प्रतिक्रिया के पिछे साहित्यकार का सम्पूर्ण व्यक्तित्व क्रियाशील रहता है। इसीलिए प्रत्येक लेखक की प्रतिक्रिया अपनी निजता रखती है। साहित्य की उपादेयता भी बहुआयामी है। साहित्य मनोरंजन के साथ–साथ समाज को जीने की स्वस्थ दृष्टि देता है ताकि समाज में भावात्मक संबंध स्थापित हो सके, साहित्य भावात्मक स्तर पर व्यक्ति का संस्कार करता है और उसका समसामयिक स्थिति से साक्षात्कार कराकर आगे बढ़ने की प्रेरणा देता है। मूलतः साहित्यकार की यात्रा मानवीय यथार्थ की यात्रा है।

आज के राज नेताओं पर कटाक्ष करते हुए मधुकांत जी बताना चाहते हैं कि आज एक आम इंसान किस प्रकार से अपना पूरा जीवन गंदी बस्ती या रेलवे लाईनों व सड़क के किनारों पर सामान बेचकर व्यतीत कर देता है और जो नेता लोग हैं वे अपना जीवन आदर्शों के साथ जीना तो नही चाहते मगर हां आदर्शता का ढोंग जरूर रचकर जनता के सामने अपने आपको प्रस्तुत करते हैं। मधुकांत जी ने अपनी एक कहानी के माध्यम से एक नेता का चरित्र किस प्रकार से प्रस्तुत करता है "आगे वाला रिक्शा थोड़ा खिसका तो मंत्री जी उनके बीच से निकलने लगे तभी पिछे से आती रिक्शा ने उनके पाजामें को दागदार कर दिया। इसकी चिन्ता किए बिना वे तेजी से पटरी की ओर बढ़ गए। उस दिन उन्हें पता लगा कि देश का आधा व्यापार तो पटरियों पर ही होता है। जनता के आने–जाने के लिए तो पटरियां बची ही नहीं। सारा रास्ता तो दुकानदारों ने रेहड़ी वालों ने रोक लिया है, ठीक है ये सवाल तो संसद में उठाना पड़ेगा।" (1)

कुछ हद तक तो हम सभी ये जानते हैं कि हमारे हर सामान में मिलावट होती है। ये जानते हुए भी हम सभी चुप रहते हैं। आज के राजनेता लोग भी वाकिफ होते हैं कि हर चीज में मिलावट हो रही है, मगर कोई भी इसके खिलाफ आवाज नही उठा रहा है। जब यह बात मीडिया वाले बढ़ा–चढ़ा कर समाज के सामने प्रस्तुत करते हैं तो सारा समाज और राजनेता लोग भी जाग उठते हैं, फिर किस प्रकार से समाज में इस पर कार्य होता है। टी.वी., समाचार पत्रों और रेडियो पर इन चीजों से दूर रहने के लिए हिदायत दी जाती है। इस पर करारा व्यंग्य करते हुए मधुकांत जी अपनी कहानी में लिखते हैं ''ख्यालीराम, एक बात तो है जब से यह मिलावट की खबर टी.वी. पर आयी है तब से लोग जागरूक तो हुए है'-मैनें चाय का घूंट लेते हुए कहा–'अब तो लगता है सबको जगाने का काम मीडिया ही कर रहा है। मीडिया में खबर आने के बाद ही सरकार जागती है। मंत्रालय में भागदौड़ होती है तो अधिकारियों को भी भागदौड़ करनी पड़ती है।''(2)

आज हमारे समाज के सामने एक समस्या और देखने में आती है और वो है भ्रूण हत्या। इस बारे में भी उन्होंने हमारे समाज पर एक कटाक्ष किया है और कहा है कि हमारे यहां पर लड़कियों का जन्मस्तर दिन–प्रतिदिन गिरता ही जा रहा है। जिसके चलते ना जाने कितने ही युवक अविवाहित फिर रहे है। इस पर भी मधुकांत जी ने करारी चोट अपने व्यंग्य के माध्यम से ख्यालीराम के जरिये समाज को सीख देने की कोशिश की है। ''अरे बस अचानक ठहर क्यों गई ? हां ठीक है फाटक आ गया ना। हमने निहायत सावधानी से अखबार के कोने से नजर चुराकर अपने प्रेमी जूते को देखा। देखते ही अपने पर रोना आ गया साहब, हमारा प्रेमी जूता भी हमारी तरह कुंवारा एल्यूमिनियम की पट्टी में उलझ–पुलझ हो रहा था। बस में बैठे–बैठे हमने अपना सिर धुन लिया और सोच लिया शायद हमारी किस्मत में कुंवारा ही मरना लिखा है। आपको हमसे थोड़ी सी भी हमदर्दी हो तो ध्यान रखिएगा, अवश्य आपको याद है ना, कैसी भी हो हमें चाहिए केवल एक अदद बीबी.....।''(3)

आज जिस प्रकार से हमारे यहां पर सरकारी स्कूलों में पढ़ाई का स्तर लगातार गिरता जा रहा है। उसके बारे में इन्होंने अपना तीखा व्यंग्य किया है। किस प्रकार से समाज में आज का अध्यापक आलसी होता जा रहा है और वह अपने विद्यार्थियों के माध्यम से ही अपना कार्य कराकर अपने कार्य को निजात पाने की कोशिश करना चाहता है। इय व्यंग्य की चोट से वह किस प्रकार से आज के अध्यापक पर प्रहार कर रहा है यह देखिए–''इस बालक को किसलिए साथ लाए हो, 'साहब, रास्ते में कोई ऊंच–नीच हो जाए तो–कुछ मार्किंग में भी हैल्प कर देगा। बहुत होशियार है देखना पेपरों की रेल बना देगा।' कौन सी कक्षा में पढ़ता है ? गुप्ता जी ने ख्यालीराम की बात काटकर पूछा। जी नौंवी में, सोनू बोल पड़ा।' ख्यालीराम तुम भी कमाल करते हो नौंवी का छात्र और दसवीं के छात्रों के पेपर चैक करेगा।' चिंता न करो, कई वर्ष का अनुभव है इसका, फिर पेपर तो मैं चैक करूंगा यह तो जोड़ घटा कर देगा।''(4)

आज हमारी राजनीति इस प्रकार की हो गई है कि वह बस अपना ही फायदा देखती है। यहां पर राजनेता किस प्रकार से भ्रश्टता के चंगुल में फंसते हुए जा रहा है और राजनीति में आने से पहले राजनेता किस प्रकार से जनता को बहलाते और फुसलाते हैं। सत्ता में बनने के बाद ये किस प्रकार की बैठक बुलाते हैं और उनको किस–किस प्रकार के आदेश देते हैं। ये भी एक व्यंग्य के माध्यम से दिखाने की कोशिश मधुकांत जी ने की है। ''आनन–फानन में सभी अधिकारियों की बैठक बुलायी गयी। योग्यता के अनुसार उनको अलग–अलग श्रेणियों में बांटा गया। प्रथम लिस्ट में व्यक्तिगत सम्बंध वाले, दूसरी लिस्ट में लाभ पहुंचाने वाले और तीसरी लिस्ट में मंत्रालय के गलत कार्यों को दबाकर उनको अच्छा बताकर प्रचार–प्रसार करने वाले। तम्बाकू मंत्री ख्यालीराम जिन्होंने अभी–अभी मंत्रालय संभाला था, अपना प्रथम भाशण दिया 'मेरे कमाऊ पुत्रों सबसे पहले तो यह पता लगाओं अपने विभाग से कमाई के साधन कौन–कौन से हैं। विभाग की कमाई बढ़ेगी तो सबको ही लाभ होगा।''(5)

आजकल जिस प्रकार से लड़कियों का जन्मस्तर गिरता जा रहा है, उसी को देखते हुए आज लड़कों की शादी में बाधा आ रही है। हर कोई इसी जोड़–तोड़ में लगा रहता है कि शाम, दाम, दंड भेद चाहे जो भी हो अपना काम कर अपने पुत्र, भाई

या अपने सगे संबंधी की बस शादी हो जाए। एक तो लड़कियों की कमी, दूसरे रोजगार नही। आज का युवा किस प्रकार से पढ़ लिखकर बेरोजगार होता जा रहा है उस पर इन्होंने अपनी लेखनी के माध्यम से व्यंग्य किया है–"राजनैतिक गलियारे के पिछवाड़े से एक बात आपको चुपके से बताता हूं कि अपने नेता ख्यालीराम शादी के बंधन में बंधते–बंधते रह गए थे। जिस दिन ख्यालीराम को देखने आने वाले थे उस दिन पिताश्री ने उसको सजा संवार कर, धवल कपड़े पहनाकर अपनी दूध की दुकान पर बैठा लिया। ग्राहक उसको सफेद कपड़ों में फंसे सफेद दूध उड़ेलते देख अंदर–ही–अंदर मुस्कराते लेकिन लड़की वालों ने ख्यालीराम को पसंद कर लिया।"(6)

यह कटाक्ष हमारे उन युवा साथियों पर किया गया है जो आज सरकारी बसों में सफर के दौरान सुविधाएं तो सारी चाहते हैं मगर किराये के नाम पर वो टिकट तक लेना अपनी शान के खिलाफ समझते हैं। आज का युवा किस प्रकार से सरकारी बसों में टिकट लेना तोहिन समझता है इस पर अपना एक व्यंग्य वह अपनी कहानी के माध्यम से प्रस्तुत करता है मधुकांत जी ने इस व्यंग्य को इस प्रकार से व्यक्त किया है। "आपको विश्वास न आए तो करके देख लीजिए। जितना किराया आप बेटिकट यात्रा करके बचाएं उसे एक गुल्लक में डालते रहिये और जितने रूपए रिश्वत या जुर्माने में अदा करे उसी में से निकालते रहे फिर देखिये आपकी गुल्लक कैसे दिन रात चौगनी फुलती जाती है।"(7)

समाज के सामने आज एक बहुत ही बड़ी समस्या यह देखने में आती है कि जो भी हमारे राजनेता है जो इस समाज को चलाते हैं वो लगभग सारे अनपढ़ हैं जिन नेताओं को ये भी नही पता होता कि मूली धरती में पैदा होती है या पेड़ पर लगती है। वो आज कृशि मंत्री के पद पर आसीन है और जो दसवीं फेल हैं, उन्हें शिक्षा मंत्री के पद पर बैठा दिया जाता है। वो बताओ कैसे शासन को चला पायेंगे फिर भी वो पांच साल तक पूरे मजे से सरकार को चलाते हैं। आराम से कुर्सी पर बैठे जो भी ऑर्डर देते हैं उनको तुरंत पारित कर भी दिया जाता है। अब ऐसे नेता किसी का इन्टरव्यू लेंगे तो वो किस प्रकार से लेंगे। ये भी मधुकांत जी ने एक व्यंग्य के माध्यम से दिखाने की कोशिश की है। "दस अप्रैल को जैसे ही पांचों अर्थात लीडरशीप अकादमी के चेयरमैन, वायस चेयरमैन, सेक्रेट्री, कोशाध्यक्ष तथा मैनेजर साहब ने प्रवेश किया तो अपने फार्म हाऊस में छोटी बड़ी कारों का जमावड़ा देखकर दंग रह गए। उत्साह से भरकर जैसे ही उन्होंने कार्यालय में प्रवेश किया तो लीडर बनने वाले छात्रों का इन्टरव्यू चालू हो गया।' छात्रों ने हिचकिचाते हुए कमरे में प्रवेश किया.....। गुडमॉर्निंग सर....।' वकील साहब 'आपकी क्वालिफिकेशन....? जी, एम.ए. पॉलिटिकल साईंस, पी.एचडी' उसने अपनी डिग्रियां वकील साहब की ओर बढ़ा दी। लीडर–देख, इन डिग्रियों को तो अपने पास रख, किसी कॉलेज के इन्टरव्यू में दिखाना, हमें तो ये बता, आपने स्कूल कॉलेज में कभी चुनाव लड़ा है ? छात्र–जी नही' वकील–झूठ बोलना, गाली देना, या झूठा वादा करना आता है ?"(8)

कहते हैं कि अध्यापक विद्यार्थी का पथप्रदर्शक होता है। वह जो रास्ता अपने विद्यार्थी को दिखाता है वह उसी रास्ते पर आगे बढ़ कर अपना और अपने माता–पिता का नाम रोशन करता है। पहले का अध्यापक खाली अपनी तनख्वाह में गुजारा करके दूर से पढ़ाने के लिए स्कूलों में आया जाया करता था। परन्तु आज का अध्यापक अपने गांव नजदीक होने पर भी स्कूल पहुंचने में आना–कानी करता है। वह चाहता है कि उसका वेतन तो दुगुना–तिगुना हो परन्तु पढ़ाने का काम बिल्कुल भी ना हो। वह खुद तो सरकारी नौकरी करता है और अपने बच्चों को निजी स्कूलों में पढ़ाता है। आज के इस अध्यापक की बदलती हुई मानसिक विचारधारा पर इस प्रकार से व्यंग्य किया है मधुकांत जी ने। "वित्तमंत्री की भांति मास्टर दो उनको समझाने लगे, 'जो अध्यापक डबल शिफ्ट में काम करेगा उसको दुगना वेतन मिलेगा। जानते हो दुगना वेतन होने पर सरकार के पास इन्कम टैक्स कितना जाएगा। सरकार एक हाथ से देगी तथा दूसरे से वापस भी ले लेगी। अध्यापक भी खुश और सरकार भी खुश।' बात तो सही है.....। अपना समर्थन पाकर मास्टर दो अधिक उत्साह से बोलने लगे, 'स्कूलों में अध्यापकों की समस्या तो दूर हो ही जाएगी बल्कि स्टॉफ सरप्लस हो जाएगा और रही देश में बेरोजगारी की बात सो आजकल करने के लिए सैकड़ों काम है। आलसी और कामचोर आदमी ही बेरोजगार है, नही तो देश में काम की कमी नहीं है।" (9)

आज के ग्रामिण सरकारी स्कूलों में यह भी देखने में आता है कि एक कमरा जो कि अध्यापकों का खाने–पीने का कमरा होता है। उसको बच्चों से बचाने के लिए अध्यापक उसमें भूत होने का अंदेशा बताते हैं ताकि विद्यार्थी उस ओर भूल कर भी ना जाएं। इस पर मधुकांत जी ने व्यंग्य करते हुए बताया है। ''गांव के स्कूल में भी किसी–न–किसी भूत का सांया मंडराता रहता है, इसलिए तो सबकुछ गड़बड़ है। मुख्य सड़क से पांच किलोमीटर दूर स्थित इस स्कूल में कोई अध्यापक आकर खुश नहीं। सजाआफता किसी अध्यापक को भेज भी दिया जाता है तो पढ़ाकर खुश नहीं। कंप्यूटर रूम, प्रयोगशाला, पुस्कालय तो वर्शों से बन्द पड़े है। कहते हैं कि भूत इन्हीं में रहता है। कभी–कभी रात को भूत सामान को उठा भी ले जाता है। इनके पिछवाड़े एक स्टाफरूम है जिसमें विद्यार्थियों का जाना वर्जित है। कभी–कभी हवा का रूख स्टाफरूम से कक्षा–कक्षों की ओर हो जाए तो तम्बाकू का धुंआ, शराब, शराब और आमलेट की गंध ऊधर से आने लगती है। खाली घंटिया, मौज–मस्ती तथा छुट्टियों की इतनी भरमार होती है कि विद्यार्थियों का ध्यान उस गंध को नही पहचान पाता। राम प्यारी की ड्यूटी सदैव स्टाफरूम में लगी रहती, घंटी बजाने आदि का काम बच्चे खुशी–खुशी संभाल लेते।''(10)

समाज में पुरूष ही प्रधान माना गया है किसी भी स्थिति में महिलाओं अथवा औरतों को किसी भी प्रकार के कोई भी अधिकार प्राप्त नही हैं। सब जगह पर पुरूष प्रधान ही समाज माना गया है। इस पर कटाक्ष करते हुए डॉ. ज्ञानी देवी गुप्ता जी कहती हैं–"सभी परिस्थितियों में पुरूष ही परिवार का मुखिया होता है, उतराधिकार के मामले में वंशक्रम स्त्रियों से नही पुरूषों में ही चलता है।"(11)

आज जो लोगों पर नीम–हकीम होने का भयंकर भूत सवार हो गया है। उस पर भी कटाक्ष किए बगैर मधुकात जी नही रह सके हैं। इस पर व्यंग्य करते हुए मधुकांत जी कहते हैं। ''वैसे तो मेरे देश का प्रत्येक नागरिक एक कुशल डॉक्टर है। वह स्वयं चाहे कितनी भी भयंकर बिमारी से पीड़ित हो लेकिन आपको दो–चार नुस्खे अवश्य बता देगा और पूरे विश्वास के साथ ठीक की गारंटी दे देगा।''(12)

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि मधुकांत जी ने समाज की विभिन्न बुराईयों को अपनी कहानियों के माध्यम से समाज के सामने प्रस्तुत किया है। समाज के अन्दर जो आज राजनीति का खेल हम अपने चारों ओर देखते हैं। उसका जीवन्त वर्णन हमें अपने सामने चलचित्र की भांति घुमता सा प्रतीत होता है। इसके बाद जो कन्या भ्रूण हत्या जैसा जघन्य अपराध समाज के अन्दर होता है, और जो बुराईयां हमारे समाज को खोखला करती जा रही हैं। उसका भी चित्रण भलीभांति से हम देखते हैं। समाज में फैली बुराईयों का जिस प्रकार से विवेचन किया गया है वो हमें समाज से इन बुराईयों को खत्म करने के लिए उत्साहित करता है। आज हम इन बुराईयों को प्रत्यक्ष देख सकते हैं। मगर उन पर जो मंथन हमें करना चाहिए, वो हम नही कर पातें। हमें सबकुछ दिखाई देता है और हो सकता है कि हम भी उनका कहीं ना कहीं हिस्सा रहे हों या फिर उनका शिकार हुए हों। समाज के सामने अपनी भावनाओं को ज्यों का त्यों रखा है । उन्होंने समाज की छोटी से छोटी बुराई को भी बड़ी ही आत्मियता से उभारने का प्रयास किया है, और उसी अंदाज में उसका निराकरण करके समाज के सामने प्रस्तुत किया हैं । वह मनोरंजन के साथ–साथ समाज को शिक्षा प्रदान करने वाली रचना लेखन का कार्य करता है ।

संदर्भ सूचीः–

'ख्यालीराम कुंवारा रह गया' निहाल प्रकाशन दिल्ली द्वारा प्रथम संस्करण 2013 में प्रकाशित पुस्तक मूल्य 300 रूपए।

1. कहानी नेता ख्यालीराम भीड़ में पृ.संख्या 23
2. कहानी असली नकली ख्यालीराम में पृ.संख्या 26
3. कहानी ख्यालीराम कुंवारा रह गया में पृ.संख्या 34
4. कहानी मार्किंग मास्टर ख्यालीराम में पृ.संख्या 40
5. कहानी तम्बाकू मंत्री ख्यालीराम में पृ.संख्या 43
6. कहानी कुंआरे नेता ख्यालीराम में पृ.संख्या 49
7. कहानी चलिए बेटिकट बेफिकर में पृ.संख्या 55
8. कहानी लिडरशिप एकेडमी में पृ.संख्या 61
9. कहानी समायोजन में पृ.संख्या 66
10. कहानी विद्याव्रत की अन्तेष्टी में पृ.संख्या 71
11. समकालीन कहानीकारों की कहानियों में पितृसत्तात्मक विद्रोह का चित्रण (शोध पत्र) पेज नं. 48, डॉ. ज्ञानी देवी गुप्ता, गुरू काशी विश्वविद्यालय, तलवंडी साबो, पंजाब।
12. कहानी नीम हकीम ख्यालीराम में पृ.संख्या 78